THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 2 April- June: 2026

# नासिरा शर्मा कृत ''ठीकरे की मंगनी'' में परम्परा और आधुनिकता का द्वन्द्व

**गीता गम्भीरी**
(पीएच.डी. शोधार्थी)
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर।

**डॉ. निशा साहनी (शोध पर्यवेक्षक)**
असिस्टेंट प्रोफेसर, टांटिया विश्वविद्यालय
श्री गंगानगर।

**सारांश:-**

***नासिरा शर्मा का उपन्यास ''ठीकरे की मंगनी'' (1989) भारतीय मुस्लिम रूढ़िवादी परिवेश में परम्परा और आधुनिकता के द्वन्द्व को चित्रित करता है। मुख्य पात्र महरूख के माध्यम से लेखिका ने समाज में व्याप्त रूढ़िवादी परम्परा (ठीकरे की मंगनी) और उभरती हुई आधुनिक चेतना के मध्य होने वाले संघर्षों को सशक्त रूप से प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास का आरम्भ महरूख के जन्म के साथ हुई ठीकरे की मंगनी से होता है। नायिका महरूख इस परम्परा को ठुकराती है, शिक्षित होकर रूढ़ियों के खिलाफ आवाज उठाती है। यह कहानी रूढ़िग्रस्त माहौल की घुटन से बाहर निकलने का संघर्ष है। जहाँ महरूख का रफत से विवाह से इन्कार करना परम्परा पर आधुनिकता की जीत को दर्शाता है। महरूख का व्यक्तित्व आधुनिक नारी की उस छवि को गढ़ता है, जो अपनी जड़ों से जुड़ी होने के बावजूद मध्य युगीन बेड़ियों को तोड़ने का साहस रखती है।***

**बीज शब्द -** *परम्परा, आधुनिकता, घर, परिवार, ठीकरे की मंगनी, समाज, जागरूक, संघर्ष।*

**प्रस्तावना -**

नासिरा शर्मा जी का उपन्यास 'ठीकरे की मंगनी' भारतीय मुस्लिम रूढ़िवादी परिवेश में परम्परा और आधुनिकता के द्वन्द्व को चित्रित करता है। यह एक मुस्लिम परिवार की कहानी है, जो अत्यन्त ही रूढ़िवादी है। यह उपन्यास मुस्लिम समाज में महिलाओं की स्थिति और रूढ़ियों से ग्रस्त माहौल की घुटन से बाहर निकलने के संघर्ष की कहानी है। इस उपन्यास का आरम्भ महरूख के जन्म के साथ हुई 'ठीकरे की मंगनी' से होता है। इस मंगनी ने महरूख को तीव्र गति से जीवन जीने वाले पुरूष की सत्ता स्वीकारने के लिए बाध्य कर दिया था।

परन्तु आधुनिक दृष्टिकोण व दृढ़ संकल्प शक्ति ने उसे थोपी हुई सत्ता के विरूद्ध खड़ा कर दिया था।

महरूख का जन्म एक मुस्लिम जैदी खानदान के पारम्परिक परिवेश में होता है। जहाँ पहले लड़कियाँ जन्मते ही मर जाती थी। अतः जब महरूख का जन्म होता है, तो उसे जिन्दा रखने के लिए व तमाम बलाएँ टालने के लिए, एक टोटके के तहत उसकी मंगनी ठीकरे से कर दी जाती है। साथ ही शाहीन खाला उसे अपने पुत्र रफत के साथ उसी दिन बाँध देती है। अतः नवजात बच्ची जन्मते ही किसी ओर की हो जाती है।

महरूख जब इन्टर में आई, तब उसने रफत को देखा था। रफत ने साफ कह दिया था कि महरूख को आगे पढ़ाया जाये। रफत महरूख को उच्च शिक्षा के लिए अपने साथ दिल्ली ले जाना चाहता था। गाँव के परम्परावादी लोग 'कुँवारी लड़की को दूसरे शहर में यँू पढ़ने भेजना अनुचित समझते थे।' अन्त में उसे पढ़ने भेज दिया गया। रफत अपनी भावी पत्नी को परम्परावादी समाज से निकालकर एक ऐसी दुनियाँ में ले गया जो आधुनिकता पर टिकी थी। उसका कहना था, ''सारे तरीके से जीना सीखो। महरूख इन पुरानी बेड़ियों को काट फेंको। दकियानूसी तरीकों को खुदा हाफिज कहो। आज से तुम्हारा नया सवेरा हुआ है।''

पाश्चात्य और आधुनिकता से ओतप्रोत वातावरण में वह महरूख की घबराहट को कम करने का प्रयत्न करता है। महरूख की झिझक भी धीरे-धीरे कम होती गई। वह रफत के मित्र रवि के साथ पुराना किला, कुतुब मीनार देख आई थी। एक बार रवि ने उसके खुले दिल का लाभ उठाना चाहा, तो महरूख जख्मी शेरनी की तरह उस पर टूट पड़ी। मनुष्य का आन्तरिक रूप नहीं बदलता। आधुनिकता तो एक नाटक है। वरना रूढ़िवादिता तो हाव भाव से टपकती है। महरूख सोच में पड़ जाती है कि क्या वह सचमुच अन्दर से रूढ़िवादी है ? यदि दो लड़कों की मित्रता इस स्तर पर होती है, तब क्या वे भी इसी नतीजे पर पहँुचते हैं। महरूख परम्परा, रूढ़िवादिता और प्रगतिशीलता के बीच अन्तर को जानने की कोशिश करती है। नये जमाने में विश्वासघात के वातावरण में औरतों के लिए वही पुराना नजरिया भोगवादी है। मित्रता क्या देह पर घटित होकर प्राप्त की जा सकती है। उसे हैरत होती है कि विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले पुरानी सोच औरतों के लिए रखते हैं, फिर क्यों ये लोग स्वयं को प्रगतिशील मानते हैं। उसे अफसोस इस बात का होता है कि

रफत ने उसके साथ अपना रिश्ता क्यों छिपाया ? अन्यथा रवि उसके साथ ऐसी हरकत करने की कोशिश भी नहीं करता।

एक दिन रफत ने उससे आकर कहा कि 'वह तीन साल के लिए अमेरिका पढ़ने के लिए जा रहा है। वहीं पर पी.एच.डी. करेगा। हवाई अड्डे पर भी वह अपने दिल की बात नहीं कह पाई। उसे अहसास हुआ कि वह इस शहर में अकेली है।

रफत भाई के मित्रों ने अमेरिका से आयी, कुछ तस्वीरें बता कर यह खबर दी कि वे वहाँ पर एक लाॅण्डरी में काम करने वाली के साथ रह रहे हैं। यह सुनकर महरूख अन्दर से बिल्कुल टूट जाती है। उसे अहसास होता है कि दुनिया का हर रिश्ता झूठा है। एतबार नाम की कोई चीज इन्सानी रिश्तों के बीच बची ही नहीं है। ''इन्सानी रिश्ते कागज की नाव' की तरह होते हैं। जो सारी एहतियात के बाद हालात के समुन्दर में डूब जाते हैं।''

खबर की भयानकता का तब पता चलता है कि जब महरूख ने पिकनिक, नाटक, काॅमन रूम में आना ही छोड़ दिया। उसका चेहरा पीला पड़ गया। रिश्तों का भ्रम टूट जाये तो जीने की नियति भी समाप्त हो जाती है। तीन फस्र्ट क्लास और एम.फिल की डिग्री लेकर दिल्ली से एक मामूली गाँव में नौकरी के लिए चली गई।

स्कूल और गाँव में जैसे-जैसे वह लोकप्रिय होती गई। उसके सहयोगी संजय और इशरत ने उसे बदनाम करने की एक योजना बनाई। प्रतिदिन देर रात उसकी कंुड़ी खटखटाकर वे वहाँ से भाग जाते थे।

नासिरा शर्मा जी ने यहाँ समाज की परम्परागत सोच पर प्रहार किया है कि जिस प्रकार एक लड़की अकेली इतनी कठिनाईयों के बावज़ूद अपने पैरों पर खड़ी होकर जीवन जीती है। इस पर भी उसके ऊपर कलंक लगता है। समाज उनके ऊपर कलंक लगाने से बाज नहीं आता है।

नासिरा शर्मा जी कहती हैं कि, ''यह सच है कि हमारा समाज इतना जागरूक नहीं हुआ है कि वह अकेली औरत को सहजता से ग्रहण कर सके। जब विवाहित कामकाजी औरत को लेकर पुरूष समाज की मानसिकता नहीं बदली है, तो फिर कँुवारी बालाआंेे के लिए ओर भी कठिन डगर है। इन संवेदनशील मुद्दों को लेकर कामकाजी महिलाएँ आहत

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 2 April- June: 2026

हैं, परन्तु निराश नहीं हैं। उन्हें पूरा विश्वास है कि एक दिन ऐसा आएगा, जब उन्हें देखने और समझने का नजरिया बदलेगा।''

महरूख के सारे खानदान में यह बात फैल गई कि रफत मेम को अमेरिका में छोड़कर डिग्री लेकर भारत में आ गये हैं। सभी के साथ रफत को भी लगा कि डिग्री को देख महरूख खुश होगी। परन्तु महरूख ने साफ कह दिया कि किसका मंगेतर और कैसी खुशी ?

तो रफत सकते में आ गए। महरूख ने इन ख्वाइशों के बंधनों से खुद को कभी का आजाद कर दिया था।

रफत ने सोचा जिस गाँव में वह कार्य कर रही है, वहीं जाकर उसे समझाये। दूसरी तरफ महरूख के परिवार वाले भी उसे रफत के पास जाने के लिए बोलने लगे। उसे माफ करने के लिए कहने लगे। इन सब बातों से लेखिका उपन्यास में यह बताना चाहती है कि स्त्री-पुरूष द्वन्द्व के बीच किस प्रकार पुरूष, प्रधान समाज में पुरूष की श्रेष्ठता स्थापित हो जाती है। सम्पूर्ण समाज पुरूष के पक्ष में हो जाता है।

महरूख के चाचा महरूख को समझाते हैं कि, ''रफत से गलती हुई है तो वह माफी माँग रहा है।'' चाचा कहते हैं कि ''जब लड़का शर्मिन्दा है तो फिर झगड़े को उसे आगे बढ़ाना मुनासिब नहीं है। जवानी मंेें ऊँच-नीच तो होती ही रहती है। फिर यही पाँव का फिसलना शादी के बाद होता तो ?'' ताई जी कहती हैं, ''एक औरत मर्द के बिना अकेली कैसे रह सकती है ?'' चाची जी कहती हैं कि, ''रंडापा तो गुजारना मुश्किला होता है औरत के लिए।'' महरूख सोचती है, ''शादी हर औरत और मर्द के लिए जरूरी है। सोचती है, क्या शादी इतनी जरूरी है, एक लड़की बिना शादी के नहीं रह सकती है। एक तरफ रूढ़िवादी मुस्लिम परिवार की परम्परागत मानसिकता है तो दूसरी तरफ शिक्षित नारी की प्रगतिशील सोच व आधुनिक विचार है।

परम्परा और आधुनिकता के बीच का द्वन्द्व का केन्द्र है महरूख। जहाँ एक ओर पुराना समाज ''ठीकरे की मंगनी'' जैसी रस्म को पत्थर की लकीर मानता है, वहीं महरूख जैसी इस थोपी हुई परम्परा को चुनौती देती है। जब रफत एक दिन गाँव के स्कूल में महरूख

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 2 April- June: 2026

से मिलने आता है। समय और मूड़ देखकर विवाह की बात छेड़ता है। तब महरूख ने जो समाधान दिया, उससे नारी अस्मिता का परिचय मिलता है।

महरूख के शब्दों में, ‘‘घर का मतलब ईंट, गारे और पत्थर की चारदीवारी से होता है और शौहर का मतलब जिन्दगी की बुनियादी जरूरतों का जरिया, तो फिर वे दोनों चीजें मेरे पास मौजूद हैं। यह दीवारें और नौकरी जो मेरा सहारा हैं।’’

उसने साफ-साफ कह दिया कि अब वह रफत के सपनों की मालकिन नहीं बन सकती। उसका कहना था कि जहाँ दिल और दिमाग मिलते हैं, वहीं औरत-मर्द का सच्चा रिश्ता है। रफत को विदेश में शादी हुई थी, यह सुनकर वह बहुत टूटी थी। बिखरी थी। उसके अन्दर की औरत, उसी लम्हे (समय) मर गयी थी। आज तक किसी ने नहीं सुना कि कोई मर्द औरत के नाम पर बैठा हो, पर ऐसी कितनी मिसालें हैं कि औरत मर्द के नाम अपनी जिन्दगी तज देती हैं। महरूख ने सोचा वह ऐसा क्यों करे ? वह यह भी जानती थी कि इस उम्र में शादी होना आसान नहीं है। रफत को भी कोई लड़की देगा नहीं। महरूख ‘‘ठीकरे की मंगनी’’ तोड़ देती है। रफत से विवाह के लिए इन्कार कर देती है।

उपन्यास के अन्त में जब महरूख के भाई-बहिन उसे अकेली जानकर अपने साथ चलने के लिए कहते हैं, तब महरूख कहती है, ‘‘एक घर औरत का अपना भी हो सकता है, जो उसके बाप और शौहर के घर से अलग उसकी मेहनत और पहचान का बना हो।’’

इस उपन्यास में महरूख ने परम्पराओं को चुनौती देते हुए आधुनिक युग की नारी का किरदार निभाया है व स्त्रियों को अपनी सत्ता बनाने के लिए कदम उठाने की प्रेरणा दी है।

**उपसंहार:-**

यह उपन्यास हालात की मार से पैदा हुई लड़की महरूख के सौम्यतापूर्ण विद्रोह की कहानी है। इसमें महरूख केवल एक पात्र नहीं, बल्कि उस सक्रमणकालीन समाज का प्रतिनिधित्व करती है। जहाँ एक ओर सदियों पुरानी जड़ परम्पराएँ हैं और दूसरी ओर शिक्षा से उपजी तार्किक आधुनिकता। इसी आधुनिकता से प्रेरित होकर महरूख पारम्परिक जकड़न को स्वीकार करने के बजाय स्वावलम्बन और आत्मनिर्णय के अधिकार को चुनती है।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 2 April- June: 2026

वह रफत से बचपन में हुई ‘‘ठीकरे की मंगनी’’ को तोड़कर अकेले जीवन जीने का निर्णय लेती है। यह शोध पत्र स्त्री के संघर्ष, उसके मानसिक द्वन्द्व और अंतत रूढ़ियों पर विवेक व परम्परा पर आधुनिकता की विजय को प्रस्तुत करता है। यहाँ आधुनिकता का अर्थ परम्परा का पूर्ण विनाश नहीं है, बल्कि उन अमानवीय परम्पराओं का त्याग है जो इन्सान की गरिमा को कम करती है। परम्परा तभी सार्थक है जब वह विकास में सहायक हो, न कि बेड़िया बनें। अंततः महरूख का व्यक्तित्व आधुनिक नारी की उस छवि को गढ़ता है जो अपनी जड़ों से जुड़ी होने के बावजूद मध्ययुगीन पारम्परिक बेड़ियों को तोड़ने का साहस रखती है।

**सन्दर्भ सूची:-**

1. ‘‘ठीकरे की मंगनी’’, नासिरा शर्मा, पृष्ठ संख्या 31
2. ‘‘ठीकरे की मंगनी’’, नासिरा शर्मा, पृष्ठ संख्या 61
3. ‘‘औरत के लिए औरत’’, नासिरा शर्मा, पृष्ठ संख्या 164
4. ‘‘ठीकरे की मंगनी’’, नासिरा शर्मा, पृष्ठ संख्या 18, 19
5. ‘‘ठीकरे की मंगनी’’, नासिरा शर्मा, पृष्ठ संख्या 143

- - - - -